स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्याशाखा अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

“तृतीयलिंगी विमर्श केंद्रित हिंदी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन”

शोध–छात्र

बालाजी पांडुरंग सूर्यवंशी

एम.ए. (हिंदी), नेट

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

शिवाजी महाविद्यालय, उदगीर जिला–लातूर

मार्गदर्शक

डॉ.व्ही.के. भालेराव

सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागप्रमुख

शिवाजी महाविद्यालय, उदगीर जिला–लातूर

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर जिला लातूर

मार्च 2022

प्रस्तावना

मानवाधिकार' मनुष्य की तरफ मनुष्य के रूप में देखने की पहल करता है। उत्तर आधुनिकता के दौर में मानवाधिकारों की चर्चा अपने चरम उत्कर्ष पर है। मानवाधिकार एक ऐसा शब्द है जो वर्तमान समय में विचार–विमर्श के केंद्र में है। सभा–संमेलन, संगोष्ठियाँ, साहित्य, चर्चा–परिचर्चा, मोर्चे, अनशन, आंदोलन, जनसंचार माध्यम, न्याय व्यवस्था आदि के द्‌वारा हर व्यक्ति एवं हर समुदाय द्‌वारा हर तरफ अपने अधिकारों की मांग की जा रही है। भारत में संविधान मानवाधिकारों का प्रतीक एवं आधारग्रंथ बन गया है। उसमें लोग अपने अधिकारों की खोज करते हैं। लेकिन एक ऐसा तबका है, ऐसे कुछ लोग हैं जिनको न समाज द्‌वारा कुछ अधिकार मिला और न ही इनको मानव समझा गया। वे पैदा होते हैं मनुष्य के रूप में ही और मनुष्य के बीच में ही, वे रहते भी हैं इसी मानवी समुदाय में ही, लेकिन उनको मनुष्य के रूप में जीने के अधिकार से वंचित किया गया, बहिष्कृत किया गया उन्हें जीवन जगत् की चेतनामय प्रवाहधारा से। असंख्य प्रश्नों के साथ लढते हुए, संघर्षरत जीवन जीने के लिए विवश उस मनुष्य रूप का नाम है....हिजड़ा!

समाज को जब पता चल जाता है कि कोई बच्चा लैंगिक विकलांग पैदा हुआ है तो समाज उसे परिवार से दूर करने के लिए अपनी साझेदारी निभाता है। कभी–कभी परिस्थिति के दबाव में माँ–बाप हिजड़ा बच्चे को घर से दूर करते हैं तो कभी–कभी वह स्वयं अपना घर त्याग देता है। इस बीच जितना अवकाश मिला उतना ही घर–परिवार का संग उसे मिल जाता है। हिजड़ा जब अपने परिवार से टूट जाता है तब शुरु होती है उसके संघर्ष और यातनामय जीवन की कठिनतम यात्रा। इस यात्रा में वह बिल्कुल अकेला होता है, चक्रव्यूह में फसे अभिमन्यू की तरह।

भारत के विभिन्न भागों में इनको निम्न शब्दों द्‌वारा संबोधित किया जाता है–हिजड़ा, खोजा, जनखा, छक्का, अरावनी, खुसरा, कीव, पावेया, कोती, ख्वाजासरा, शिखंडी, वृहन्नला, मौसी, जोगप्पा, जोगता, शिवशक्ति आदि। इनमें भी सामान्य लोग ज्यादातर 'हिजड़ा' नाम का ही प्रयोग करते हैं। परिष्कृत भाषा के रुप में सभ्य समाज, साहित्यकार, प्रशासन तथा मीडियाकर्मियों द्‌वारा उनके लिए 'किन्नर' नाम का भी प्रयोग किया जाने लगा है। कुछ लोग इनके लिए दिव्यांग या लैंगिक–विकलांग नाम की भी पहल करते हैं। वर्तमान समय में इनके लिए 'थर्ड जेंडर' (तृतीय लिंग) पद का भी प्रयोग किया जा रहा है।

कई अन्य प्रकार की लैंगिक अस्मिताओं को भी स्वीकृति मिल रही है, जैसे–समलैंगिक स्त्री (लेस्बियन), समलैंगिक पुरुष (गे), उभयलिंगकामी (बाई–सेक्सुअल), उभयलिंगी (इंटर–सेक्सुअल), लिंगपरिवर्तित (ट्रान्स–सेक्सुअल) तथा स्त्रैण पुरुष (ट्रावेस्टीप) आदि। किंतु लैंगिक अस्मिताओं के ये अन्य रुप स्त्री या

पुरुष के खाँचे में बैठते हैं शिवाय हिजड़ा के, इसीलिए उसे तृतीय लिंग (थर्ड जेंडर) कहा जाने लगा है। हिजड़ों के लिए अब पुरे विश्व में 'ट्रान्सजेंडर' शब्द के रुप में मान्यता मिल रही है।

समाजमन स्त्री और पुरुष को तो अपने में समाहित किया किंतु तृतीयलिंगी व्यक्ति को तुफान में फँसे तिनके की तरह छोड़ दिया दर–दर भटकने के लिए। फिर तृतीयलिंगी व्यक्ति ने अपने स्वतंत्र समाज की निर्मिती की, जिसके अपने नियम एवं कायदे–कानून हैं। हिजड़ा व्यक्ति अपनी मौत को ही अपनी यातनाओं से मुक्ति मानता है। जब तक वह जीवित रहता है तब तक हिजड़ा होने की काली परछाई उसके साथ रहती है। जवानी की ढ़लान पर तो उसका जीवन साक्षात नरक बन जाता है। वह कितना जीता है यह भी एक प्रश्न है, रहस्य है।

हिजड़ा समुदाय के बारे में मुख्यधारा के समाज में अनेक प्रकार के पूर्वाग्रह तथा भ्रांतियां होती है। वस्तुतः इनके प्रति लोगों की मानसिकता एवं सोच नकारात्मक ही दिखाई देती है। हिजडों की दुनिया लोगों को अप्रिय, अकाम्य एवं अवांछित ही लगती है। उनके यौन संबंधों में मुख्य समाज को, हमारी तथाकथित नैतिक मानदंडों पर आधारित सभ्यता को अनैतिकता की बू आती है। इस कारण उनकी दुनिया हमें घृणित एवं वर्जित लगती है। उनके प्रति समाज मन में भय, क्रोध एवं भेद भरा होता है। समाजशास्त्रियों ने समाज की इस मानसिकता को 'ट्रान्सफोबिया' कहा है और तृतीयलिंगी व्यक्ति अपने जन्म के साथ ही इस मानसिकता का शिकार एवं शोषित होता है।

थर्ड जेंडर और उनकी संस्कृति यह एक जटिल, गंभीर, विवादित एवं बहुआयामी विषय है। इस विषय के अनेक पहलू हैं जिन पर न सुधारकों का ध्यान गया न विचारक, साहित्यिक या आलोचकों का। भारतीय समाज एवं सिनेमा उनकी जीवन पद्धति, रीति–रिवाज, गीत–गायन, मान्यताओं और धार्मिक विश्वासों की ओर व्यंग्य–विनोद एवं मनोरंजन के दृष्टिकोण से देखता है, उसकी ओर गंभीरता से देखता नहीं। उनको न्याय भी केवल इतना भर मिला कि उनके अस्तित्व को केवल मान्यता एवं उनकी प्रजाति को एक नाम भर मिला–थर्ड जेंडर। इनको अभिव्यक्त करने के लिए हिंदी की भाषाई संरचना भी अभावग्रस्त हैं। आखिर वह भी तो द्विलिंगाधारित मानसिकता पर आधारित है। फिर तृतीयलिंगी लोगों ने स्वयं भी अपने उपर एक रहस्यात्मक परदा ओढ रखा है। ये खुद भी समाज से दूरी बनाएँ रहते हैं और न ही अपने बारे में किसी को कुछ जानकारी देते हैं।

तृतीयलिंगी समाज, उनकी स्थिति, उनकी समस्याएँ तथा उनकी संस्कृति का व्यापक परिदृश्य का विचार आते ही मेरे मन में कुछ सवाल बार–बार उठ रहे हैं–क्या किन्नर लोगों की अलग संस्कृति बनी रहनी चाहिए? जो जीवन अपने–आप में श्राप है, समाज की मुख्यधारा से हमेशा के लिए विस्थपित और तिरस्कृत है जो

सफर आनंददायी न होकर कठोर वेदना से युक्त है, जो जीवन अपने आप में एक मजबूरी है, और मजबूरी में स्थापित रुढि, प्रथा परंपराओं की भी कोई संस्कृति होती है? क्या उसे हम सांस्कृतिक मान्यता दे सकते हैं ? क्या उनको हम समाज में स्थान नहीं दे सकते ? क्या हम समाज की मानसिकता को बदल नहीं सकते ? उनके मनुष्य के रुप में स्वीकारना हमारा कर्तव्य नहीं ? इन्हीं सवालों से जूझते हुए तृतीयलिंगी समाज का साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन करना ही इस शोध कार्य का उद्देश्य रहेगा।

विषय चयन की प्रेरणा

कुछ दिन पहले एक संपादित किताब के संदर्भ में तृतीयलिंगी समाज एवं उनकी संस्कृति पर अध्ययन करते समय 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा', 'किन्नरकथा', 'गुलाम मंडी', 'मैं पायल' आदि उपन्यास, मराठी में प्रकाशित लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी की आत्मकथा 'मी हिजड़ा मी लक्ष्मी' तथा कुछ आत्मोचनात्मक किताबें पढ़ते समय मुझे बार–बार यह लग रहा था कि इस विषय पर लेखन, संशोधन कार्य, चर्चा, परिचर्चा आदि की काफी आवश्यकता है। हिंदी साहित्य में दलित विमर्श एवं स्त्री विमर्श की चर्चा काफी जोर–शोर के साथ हो रही है मगर तृतीयलिंगी समाज साहित्य एवं चिंतन के हाशिए पर है। उनके बारे में समाज मानसिकता भी नकारात्मक है। पहले कई बार मैंने तृतीयलिंगी व्यक्ति को देखा था मगर उनके बारे में गहराई से कभी विचार नहीं किया था, उसकी आवश्यकता भी कभी महसूस नहीं हुई। वस्तुतः उनको लेकर समाज की तरह मेरे मन में भी एक डर–सा बना हुआ था। उनके प्रति कई गलत धारणाएँ मेरे मन में भी थी। किंतु उनके संदर्भ में प्रकाशित कुछ किताबें पढ़ने से मेरी उन धारणाओं में सकारात्मक परिवर्तन आया और मुझे लगा कि समाज की मानसिकता में परिवर्तन लाने के लिए इस विषय पर व्यापक मात्रा में कार्य करने की आवश्यकता है। इस विषय को लेकर मेरे विभाग के सहयोगी तथा मार्गदर्शक डॉ.व्ही.के. भालेराव जी से मैंने विस्तृत चर्चा की। उन्होंने इस विषय का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने का सुझाव दिया। अतः मैंने शोध कार्य के लिए प्रस्तुत विषय का चयन किया।

आंतरविद्याशाखीय संबंध

प्रस्तुत विषय साहित्य के साथ ज्ञान की अन्य शाखाओं के साथ भी अनन्य रूप से जुड़ा हुआ है। वर्तमान साहित्य में धीरे–धीरे यह विषय केंद्र की ओर आता हुआ दिखाई दे रहा है। किंतु फिर भी इस विषय पर जितना लिखा जाना चाहिए उतना नहीं लिखा गया। मगर उत्तर आधुनिक समय में अनछुए विषय को समाज समक्ष रखने की दिशा में साहित्यकार पहल करते हुए दिखाई दे रहे हैं। साहित्य के साथ यह विषय समाजशास्त्र से भी जुड़ा हुआ है, जिसमें उनकी सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया जा रहा है। इतिहास में भी तृतीयलिंगी समाज का उल्लेख

दिखाई देता है। अतः ऐतिहासिक संदर्भ में भी उनकी स्थिति का अध्ययन किया जा सकता है, जो उनके विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। आर्थिक संदर्भ में भी तृतीयलिंगी समाज का अध्ययन किया जा सकता है। उनका आर्थिक पक्ष काफी कमजोर दिखाई देता है। उनके कारणों को सामने लाकर उन्हें आर्थिक विकास के साथ जोड़ना आवश्यक है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी उनकी पहचान एवं परख करते हुए लिंगभाव के प्रति समाज में जागरुकता लाना एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रसारित करना अत्यंत आवश्यक है। अतः स्पष्ट है कि आंतरविद्याशाखीय अध्ययन के दृष्टिकोण से इस विषय का अध्ययन, संशोधन कार्य एक विशिष्ट महत्त्व रखता है।

विषय की व्यापकता

तृतीयलिंगी समाज का निर्माण स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग की तरह प्रकृति द्वारा ही होती है। इनके अस्तित्व के प्रमाण पुराण एवं इतिहास में अनादि–काल से ही दिखाई देते है। रामायण, महाभारतादि पौराणिक आख्यानों, कौटिल्य कृत 'अर्थशास्त्र', संस्कृत साहित्य, मध्यकालीन इतिहास आदि में इस समाज से संबंधित बहुत सारी घटनाएँ मौजूद दिखाई देती है। अतः कालक्रम के संदर्भ में प्रस्तुत विषय की व्याप्ति काफी प्राचीन है। विस्तार के दृष्टिकोण से भी यह विषय अत्यंत व्यापक है। संसार के विभिन्न राष्ट्रों में तृतीयलिंगी समाज का अस्तित्त्व दिखाई देता है। फिर भी इस समाज की ओर आज तक मानवीय दृष्टिकोण से गंभीरतापूर्वक देखा नहीं गया।

साधारणतः माना जाता है कि देशभर में किन्नरों के लगभग 500 धाम हैं, जहाँ उनके नायक और गुरु बसते हैं। महेन्द्र भीष्म के अनुसार भारत में कुल चार सौ पचास धाम और उतने ही गुरु धाम हैं। देश में हिजड़ों की संख्या कितनी है इस बारे में मतभिन्नता दिखाई देती है। इस संदर्भ में कोई विश्वसनीय स्त्रोत उपलब्ध नहीं है। माना जाता है कि लैंगिक विकलांग अर्थात तृतीयलिंगी व्यक्तियों की संख्या भारत में लगभग 50 लाख के आसपास है। महेन्द्र भीष्म जी ने 'किन्नर कथा' उपन्यास में संपूर्ण देश में किन्नरों की संख्या चौदह से पंद्रह लाख के आसपास बताई है। उसमें भी आधे से ज्यादा संख्या वे नकली किन्नरों की बताते हैं।

हिजड़ा लोगों को विभिन्न आधारों पर विभाजित भी किया जाता है। बुचरा और उनकी तीन बहनों के आधार पर उनकी चार शाखाएँ बतायी जाती है–बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा। कहा जाता है कि तृतीयलिंगी समाज में 'बुचरा' शाखा का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। जन्मजात अपूर्णलिंगी व्यक्ति को बुचरा कहा जाता है। ये पैदाइशी हिजड़े होते हैं। कहा जाता है कि 'नीलिमा' शाखा में जबरन बनाए गए हिजड़े होते हैं तो 'मनसा' शाखा में इच्छा से बने हिजड़े आते हैं जो

अपने–आप को मानसिक तौर पर विपरित लिंगी या स्त्री–लिंग के नजदीक पाते हैं। शारीरिक कमी के कारण या अपने स्त्रैण स्वभाव के कारण जो हिजड़ा वृत्ती धारण करते हैं उन्हें 'हंसा' कहा जाता है। इसके अलावा भी कई प्रकार मिलते हैं। जैसे नकली हिजड़ों को 'अबुआ' कहा जाता है तो लिंगोच्छेदन कर बनाए गए हिजड़ों को 'छिबरा' कहते हैं।

मुगल शासन काल में हिजड़ों की स्थिति बहुत अच्छी थी। भारत में अंग्रेजों के आगमन के साथ इनकी इस स्थिति में बदलाव आता है। वे अंग्रेजों की संदेह दृष्टि के शिकार हो गए। अंग्रेजों द्वारा 1871 ई. में एक आदिवासी कानून के तहत उन्हें अपराधिक जनजाति (क्रिमिनल ट्राइब्स) के वर्ग में सम्मिलित किया गया। संविधान के लागू होने पर इनको इस कानून से तो मुक्ति मिली पर कुछ विशेष अधिकार नहीं मिले और किसी ने विशेष प्रयास भी नहीं किया उनकी यातनाओं की मुक्ति के लिए।

तृतीयलिंगी व्यक्ति समाज से कटा हुआ है। समाज ने उसे बहिष्कृत किया है और उसकी और तिरस्कृत नजर से देखा जाता है। अतः तृतीयलिंगी व्यक्ति एक संघर्षमय जीवन जीने के लिए मजबूर एवं विवश है। सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से तृतीयलिंगी समाज की स्थिति काफी सोचनीय है। समाज से कटने के कारण वह रोजगार की व्यवस्था एवं साधनों से कटा हुआ है। उनके संघर्षमय जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण है समाज की मानसिकता। इस मानसिकता में बदलाव लाने के लिए तथा तृतीयलिंगी व्यक्ति की समाज स्वीकृति के लिए इस विषय पर जन–जागरण की आवश्यकता है। इसी कारण प्रस्तुत विषय पर शोधकार्य की अत्यंत आवश्यकता है। इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत विषय को वर्तमान समय में वरियता देने की आवश्यकता है।

तृतीयलिंगी व्यक्ति को देखकर हर कोई अपना रास्ता बदल देता है। उनके बारे में कोई विचार भी नहीं करना चाहता है, उनसे मिलना–जुलना, उनके साथ उठना–बैठना तो दूर की बात। यदि कोई उनके साथ बात भी करता है तो समाज उसकी ओर भी संदेह की नजर से देखने लगता है। समाज की इस सोच में बदलाव लाने के दृष्टिकोण से भी प्रस्तुत विषय का अत्यंत महत्त्व है।

उद्देश

लघुशोध योजना के लिए प्रस्तुत विषय 'तृतीयलिंगी जीवन : साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन' का चयन करते समय मेरे सामने निम्न उद्देश्य हैं–

(1) हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त तृतीयलिंगी विमर्श का समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर अध्ययन करना।

(2) तृतीयलिंगी साहित्य परंपरा का अध्ययन करना।

(3) 'तृतीयलिंगी' अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उनके प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रसारित करना।

(4) तृतीयलिंगी समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति एवं उसके कारणों का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।

(5) तृतीयलिंगी समाज के संदर्भ में प्रचलित किवंदलितयों का तथ्यात्मक विश्लेषण करना।

(6) तृतीयलिंगी समाज से संबंधित विभिन्न पूर्वाग्रह भ्रांतियाँ और प्रथा–परंपराओं का अध्ययन करना।

(7) विभिन्न लैंगिक अस्मिताओं का विश्लेषण करते हुए तृतीयलिंगी व्यक्ति को मानसिक कमजोरी से निकालकर सशक्त, निर्भय एवं समृद्ध बनाना।

(8) मानवीय दृष्टिकोण से तृतीयलिंगी साहित्य एवं समाज का अध्ययन करते हुए उनमें निहित मानवीयता का प्रसार करना।

(9) तृतीयलिंगी समाज के उत्कर्ष के लिए प्रयत्नरत संस्थाओं तथा व्यक्तियों का अध्ययन तथा प्रचार–प्रसार करना।

(10) तृतीयलिंगी समाज से सम्बन्धित संवैधानिक अधिकारों का प्रचार–प्रसार करना तथा हिंदी उपन्यासों में निहित चेतना का अध्ययन करना।

अनुसन्धान पद्धति

साहित्यिक अनुसंधान और प्रयोगात्मक अनुसंधान तथा समाजशास्त्रीय अनुसंधान में अंतर होता है। साहित्यिक अनुसंधान में मुख्यतः मननात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया जाता है। इसमें सृजनात्मक तथा आलोचनात्मक सामग्री का अध्ययन करके विश्लेषण, व्याख्या और मनन–चिंतन के द्वारा निश्चित निर्णयों का प्रतिपादन किया जाता है। चिंतन–मनन के द्वारा अध्ययन करने के कारण इस पद्धति को अध्ययनात्मक शोध भी कहा जाता है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए मननात्मक या अध्ययनात्मक शोध–प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। इसके तहत प्रस्तुत विषय का विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक, व्याख्यात्मक अध्ययन करते हुए विषय का ऐतिहासिक मूल्यांकन भी किया जाएगा। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए समाजशास्त्रीय अध्ययन शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। इसमें प्रस्तुत विषय के बारे में गहराई से चिंतन–विचार कर उसके विभिन्न सामाजिक पहलुओं का परिक्षण करते हुए अध्ययन के उपरांत आए निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाएँगे।

परिकल्पना

(1) इक्कीसवी शताब्दी के प्रथम दो दशकों में हिंदी उपन्यासों में तृतीयलिंगी विमर्श को प्रधानता से अभिव्यक्त किया गया है।

(2) तृतीयलिंगी समाज सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण से आज भी हाशिए पर है।

(3) हिंदी उपन्यासों में तृतीयलिंगी समाज जीवन का यथार्थपरक चित्रांकन किया गया है।

(4) तृतीयलिंगी समाज अनेक सामाजिक यातनाओं से तथा समाज की नकारात्मक मानसिकता से त्रस्त है।

(5) हिंदी उपन्यासकारों ने तृतीयलिंगी समाज की तरफ मानवीय दृष्टिकोण से देखते हुए उनकी विभिन्न परिस्थितियों तथा समस्याओं का चित्रण करते हुए मानवीय चेतना को अभिव्यक्त किया है।

शोध कार्य का प्रारूप

प्रथम अध्याय : तृतीयलिंगी विमर्श : अर्थ, स्वरूप एवं हिंदी उपन्यासों में विकास

द्वितीय अध्याय : समाजशास्त्रीय अध्ययन : स्वरूपगत विश्लेषण

तृतीय अध्याय : तृतीयलिंगी विमर्श केंद्रित हिंदी उपन्यासों का तत्वगत अध्ययन

चतुर्थ अध्याय : विवेच्य उपन्यासों में चित्रित तृतीयलिंगी समाज की परिस्थितियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

पंचम अध्याय : विवेच्य उपन्यासों में चित्रित तृतीयलिंगी जीवन की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

षष्टम अध्याय : तृतीयलिंगी विमर्श केंद्रित हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन

सप्तम अध्याय : निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

प्रथम अध्याय : तृतीयलिंगी विमर्श : अर्थ, स्वरूप एवं हिंदी उपन्यासों में विकास

प्रथम अध्याय में तृतीयलिंगी विमर्श का अर्थ, स्वरूप तथा उसके विकासक्रम पर प्रकाश डाला जाएगा। इस अध्याय में तृतीयलिंगी संकल्पना का अर्थ, उसकी परिभाषाएँ एवं उसके स्वरूप को स्पष्ट किया जाएगा। तृतीयलिंगी किसे कहा जाता है, उसकी शारीरिक, मानसिक विशेषताएँ अर्थात जैविक संरचना का विवेचन किया जाएगा। साथ ही उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक संरचना आदि का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा। तृतीयलिंगी समाज का इतिहास, उनके प्रकार, सामाजिक संरचना में उनकी स्थिति–गति आदि पर प्रकाश डाला जाएगा।

इस अध्याय के अंतर्गत 'विमर्श' शब्द का अर्थ, परिभाषाएँ स्पष्ट करते हुए तृतीयलिंगी विमर्श पर प्रकाश डाला जाएगा। इसमें तृतीयलिंगी विमर्श के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करते हुए हिंदी साहित्य में तृतीयलिंगी विमर्श के उद्‌भव एवं विकास का अध्ययन किया जाएगा।

द्वितीय अध्याय : समाजशास्त्रीय अध्ययन : स्वरूपगत विश्लेषण

प्रस्तुत अध्याय में समाजशास्त्रीय अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट किया जाएगा। जिसके अंतर्गत समाजशास्त्र की परिभाषाएँ स्पष्ट करते हुए समाजशास्त्र का स्वरूप एवं व्याप्ति स्पष्ट की जाएगी। साहित्य और समाजशास्त्र का अभिन्न संबंध होता है।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इसी कारण साहित्य और समाजशास्त्र एक सिक्के के दो पहलू होते हैं। इसी आधार पर इस अध्याय में साहित्य और समाज का अंतःसंबंध स्पष्ट करते हुए साहित्य के समाजशास्त्र का विश्लेषण किया जाएगा। समाजशास्त्रीय अध्ययन में मानवीय जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्रीय अध्ययन साहित्य में व्यक्त समाज–जीवन का अध्ययन करता है। अर्थात् समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में साहित्य की आलोचना की जाती है। इस अध्ययन पद्धति के स्वरूप का प्रस्तुत अध्याय में विश्लेषण किया जाएगा।

तृतीय अध्याय : तृतीयलिंगी विमर्श केंद्रित हिंदी उपन्यासों का तत्वगत अध्ययन

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिंदी उपन्यासों में दलित विमर्श एवं नारी का स्वर प्रमुख था। मगर इक्कीसवीं शताब्दी में हिंदी उपन्यासों में हाशिए पर स्थित विभिन्न जन समुदायों के जीवन संदर्भों को अभिव्यक्ति मिली है। इस शताब्दी में अनेक विमर्श उपन्यासों के माध्यम से खुलकर सामने आते हैं, जिसमें अल्पसंख्याक विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श, वृद्ध विमर्श, तृतीयलिंगी विमर्श आदि प्रमुख हैं। हिंदी के कई रचनाकारों का ध्यान तृतीयलिंगी समाज के वेदनामय जीवन की ओर गया। उन्होंने उस समाज की अदृश्य पीड़ा को अपने उपन्यासों के माध्यम से मूर्त रूप देने का कार्य किया है।

इक्कीसवीं शताब्दी के शुरुआत के साथ ही हिंदी उपन्यासों में तृतीयलिंगी विमर्श का प्रवेश होता है। हिंदी के कई रचनाकारों ने अपने उपन्यासों में तृतीयलिंगी विमर्श को अभिव्यक्त किया है। इनमें नीरजा माधव का 'यमदीप', अनुसया त्यागी का 'मैं भी औरत हूँ', निर्मला भुराडिया का 'गुलाम मंडी', महेन्द्र भीष्म द्वारा रचित 'किन्नर कथा' और 'मैं पायल', प्रदीप सौरभ के उपन्यास 'तीसरी ताली' और 'सिर्फ तितली', चित्रा मुद्गल द्वारा रचित 'पोस्ट बॉक्स नं. 203, नालासोपारा', मोनिका देवी का 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन', भगवन्त अनमोल का 'जिंदगी 50–50', मनोज रूपड़ा का 'प्रतिसंसार', डॉ.शरद सिंह के 'पिछले पन्ने की औरतें' और 'कस्बाई सिमोन', डॉ.मुक्ति शर्मा द्वारा रचित 'शापित किन्नर' तथा डॉ.मीना शर्मा का 'मेरे हिस्से की धूप' आदि प्रमुख है। प्रस्तुत अध्याय में इन उपन्यासों का तत्वगत अध्ययन किया जाएगा

चतुर्थ अध्याय : विवेच्य उपन्यासों में चित्रित तृतीयलिंगी समाज की परिस्थितियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय में हिंदी उपन्यासों में चित्रित तृतीयलिंगी जीवन एवं समाज के विभिन्न पहलुओं का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाएगा। इसमें तृतीयलिंगी जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि पहलूओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाएगा। तृतीय लोगों का अपना समाज संगठन होता

है। उनकी अपनी विशिष्ट जीवन पद्धति होती है। उनकी अपनी विशिष्ट पहचान एवं संस्कृति होती है। उनके त्योहार–पर्व, पूजा पद्धति, श्रद्धा–अंधश्रद्धाएँ, बधाई–गीत, नृत्य, भाषा, जीवनयापन की पद्धति, आचार–विचार, आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति एवं राजनीतिक स्थिति आदि का समाजशास्त्रीय अध्ययन इस अध्याय के अंतर्गत किया जाएगा। तृतीयलिंगी समाज के प्रति अभिव्यक्त मानवीय चेतना का भी विश्लेषण इस अध्याय में होगा।

पंचम अध्याय : विवेच्य उपन्यासों में चित्रित तृतीयलिंगी जीवन की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

पंचम अध्याय में हिंदी उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में तृतीयलिंगी समाज की विभिन्न समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाएगा। तृतीयलिंगी समाज विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है। यह समाज मुख्यधारा से कटा हुआ है। द्विलिंगाधारित समाज व्यवस्था में तृतीयलिंगी लोगों का महत्व नहीं है। इनकी ओर मानवी दृष्टिकोण से देखा नहीं जाता। यह समाज शिक्षा से वंचित है। नौकरी या रोजगार का कोई भी साधन इनके पास नहीं है। घर–परिवार से ये लोग विस्थापित होकर उस पीड़ा को आजन्म सहते रहते हैं। स्वास्थ्य संबंधित अनेक समस्याओं से इनका जीवन व्याप्त होता है। इनका जीवन यौन समस्याओं की अदृश्य यातनाओं से भरा हुआ है। इन सारी समस्याओं का मार्मिक चित्रण हिंदी उपन्यासों में किया गया है, जिनका समाजशास्त्रीय अध्ययन इस उपन्यास में किया जाएगा। इनका बुढ़ापा अपने–आप में रहस्यमय एवं यातनामय होता है। इनका जीवन रूढ़ियों–परंपराओं से ग्रस्त है। वे शोषण के शिकार है, यातनाओं का अनंत, विशाल सागर है तथा विभिन्न समस्याओं के दलदल में फँसे हुए है। उन सभी समस्याओं का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया जाएगा। उनकी निराशा, कुंठा, आक्रोश, छटपटाहट आदि का विवेचन–विश्लेषण किया जाएगा।

षष्टम अध्याय : तृतीयलिंगी विमर्श केंद्रित हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय में तृतीयलिंगी विमर्श केंद्रित हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त चेतना के स्वरूप का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाएगा। किसी भी साहित्य का एक व्यापक उद्देश्य होता है। साहित्यकार केवल समाज का चित्रण नहीं करता बल्कि एक आदर्श समाज की कामना करता है। वह समाज को परिवर्तित करना चाहता है, समाज की धारणाओं में बदलाव लाना चाहता है। इस संदर्भ में तृतीयलिंगी विमर्श केंद्रित हिंदी उपन्यासों का विश्लेषण इस अध्याय के अंतर्गत किया जाएगा। इस उपन्यासों द्वारा किस प्रकार से तृतीयलिंगी व्यक्ति की चेतना को आंदोलित किया है तथा समाज की मानसिकता में बदलाव लाने का प्रयास किया है। अर्थात् सामाजिक चेतना के संदर्भ में इस अध्याय में विश्लेषण किया जाएगा।

सप्तम अध्याय : निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

षष्ठम अध्याय के अंतर्गत उपरोक्त सभी अध्यायों में विश्लेषित अध्ययन का सारांश प्रस्तुत किया जाएगा। इस अध्याय के अंतर्गत अंतिम निष्कर्ष एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाएगा। शोध के निष्कर्ष बिंदूओं को इस अध्याय में संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

संदर्भ

(1) थर्ड जेन्डर : कथा आलोचना, संपा.डॉ.फिरोज खान

(2) पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा–चित्रा मुद्‌गल

(3) किन्नर कथा–महेन्द्र भीष्म

(4) थर्ड जेंडर अनूदित कहानियाँ– संपा.डॉ.फिरोज खान

(5) मैं हिजडा, मैं लक्ष्मी–लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी

(6) हिन्दी उपन्यासों के आइने में थर्ड जेंडर–डॉ.विजेंद्र प्रताप सिंह

(7) इंद्रधनु – 2008 समपथिक ट्रस्ट 1004, बुधवार पेठ, ऑफिस नंबर 9, पुणे 411002 बिंदु माधव खिरे

(8) मनाचिये गुंती – 2013 समपथिक ट्रस्ट 1004, बुधवार पेठ, ऑफिस नंबर 9, पुणे 411002 बिंदु माधव खिरे

(9) इंटर सेक्स – 2015 समपथिक ट्रस्ट 1004, बुधवार पेठ, ऑफिस नंबर 9, पुणे 411002 बिंदु माधव खिरे

(10) सप्तरंग – 2013 समपथिक ट्रस्ट 1004, बुधवार पेठ, ऑफिस नंबर 9, पुणे 411002 बिंदु माधव खिरे

(11) अंतरंग – 2013 समपथिक ट्रस्ट 1004, बुधवार पेठ, ऑफिस नंबर 9, पुणे 411002 बिंदु माधव खिरे

(12) भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श संपा. डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह रवि कुमार गौड, अमन प्रकाशन कानपुर 2016

(13) तीसरी ताली–प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011

(14) मैं भी औरत हूँ–अनुसया त्यागी, परमेश्वरी प्रकाशन दिल्ली, 2005

(15) यमदीप–नीरजा माधव, सुनिल साहित्य सदन, 2009

(16) गुलाम मंडी–निर्मला बुराड़िया–सामायिक पैपरबैक्स, दिल्ली, 2016

(17) सिर्फ तितली–प्रदीप सौरभ

(18) अस्तित्व की तलाश में सिमरन–मोनिका देवी, माया प्रकाशन, कानपुर, 2019

(19) जिंदगी 50–50–भगवन्त अनमोल, राजकमल, नई दिल्ली, 2017

(20) प्रतिसंसार–मनोज रूपड़ा

(21) पिछले पन्ने की औरतें–डॉ.शरद सिंह

(22) मै पायल–महेन्द्र भीष्म, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2016
(23) कस्बाई सिमोन–डॉ.शरद सिंह
(24) श्रापित किन्नर–डॉ.मुक्ति शर्मा
(25) मेरे हिस्से की धूप–डॉ.नीना शर्मा, कानपुर, 2020
(26) किन्नर विमर्श–दशा और दिशा, डॉ.विनय पाठक
(27) थर्ड जेंडर विमर्श–संपा.डॉ.शरद सिंह
(28) स्त्री–पुरुष कुछ पुनर्विचार–राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
(29) साहित्य का समाजशास्त्र–डॉ.नगेंद्र, नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली, 1982
(30) साहित्य का समाजशास्त्र–बच्चनसिंह, लोकभारती प्रकाशन, 2011
(31) साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन–संपा.निर्मला जैन, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1986
(32) समाजशास्त्रीय मुलभूत संकल्पना–सर्जेराव साळुंके, नरेंद्र प्रकाशन, पुणे, 1996
(33) उपन्यास की संरचना–गोपालयराय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
(34) आधुनिक समाज में वर्ग–डी.बी. बोंटमोर, 2006
(35) विकास का समाजशास्त्र–श्यामचरण दुबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
(36) साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका–मैनेजर पांडे
(37) उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश–हरिकृष्ण रावत, रावत पब्लिकेशन, जयपुर
(38) समाजशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत–डॉ.ए.एन. तिवारी, अध्ययन पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली, 2011

शोध–छात्र
बालाजी पांडुरंग सूर्यवंशी
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
शिवाजी महाविद्यालय, उदगीर जि.लातूर

मार्गदर्शक
डॉ.व्ही.के. भालेराव
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागप्रमुख
शिवाजी महाविद्यालय, उदगीर जि.लातूर